आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 292 | ARYA SABHA MAURITIUS | *1st Aug. to 15th Aug. 2014*

सत्य महान् है ।

ओ३म् ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीऋतस्य धीतिर्वृ जिनानी हन्ति ।
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः ।

ऋ० ०४.२३.८

La Magnificence de la Vérité

Om ! Ritasya hi shouroudhaha santi pourvoha, ritasya dhitirvri jinani hanti Ritasya shloko badhi rātatarda,karnā boudhānaha shouchamāna āyoha.

Rig Veda 4/23/8

Glossaire / Shabdārtha

Ritasya hi - par la vérité, **Shouroudhaha** - Le courage ou la force morale pour venir à bout de malheur ou pour dissiper la tristesse / la douleur / le chagrin, **Pourvoha santi** - qui est éternel / qui dure tout le temps, **Ritasya dhitiha** - L'adoption de la vérité, **Vrijināni** - pour les péchés, ou autres attitudes négatives ou méprisables, **Hanti** - les anéantit ou les dissipe, **Boudhānaha** - qui éveille ou qui tire quelqu'un du sommeil, qui sort quelqu'un de sa léthargie, **Shouchamānaha** - qui brille, qui s'illumine, **Shlokaha** - la voix, le son, le bruit, **Badhirā** – sourds, **āyoha** - les hommes qui sont, **karnā** – dans les oreilles aussi, **ātatarda** – arrive à pénétrer par force.

Interprétation / Anushilan

Dans ce verset du Rig Veda la Seigneur s'adresse à l'humanité toute entière et il dit, « O mes chers enfants ! Voyons la grandeur de la vérité ! Elle est douée d'un pouvoir suprême qui éloigne de nous le malheur, la tristesse, la souffrance ou la détresse.

Une fois la vraie connaissance spirituelle est acquise par n'importe qui, il a le moral haut et il peut faire face au plus grand malheur dans sa vie sans être le moindrement affecté.

En outre, de toute éternité, c'est aussi un fait indéniable que tous ceux qui ont supporté stoïquement l'adversité dans leur vie avaient certainement acquis cette compétence spirituelle de la vérité.

Pour vous débarrasser de vos mauvais penchants, de vos arrière-pensées et de vos péchés, adoptez la vérité. Aussitôt qu'une personne prend le chemin de la vérité, il n'y a pas de place pour le mal dans sa vie. Mais celui qui, en son âme et conscience, pratique partiellement la vérité demeure toujours dans l'emprise du mal. Seul la croyance inébranlable dans la vérité peut lui apporter le bonheur éternel ou le salut de son âme.

Si on a la vérité avec soi, on peut même se faire entendre par nos adversaires les plus coriaces car nos paroles de vérité doivent les affecter positivement.

La vérité a une puissance voire une vibration qui tire les gens de leur léthargie, les réveille, illumine leur intelligence et les rend conscient de la réalité.

Elle peut même pénétrer dans les oreilles des ceux qui ne veulent pas l'entendre par leur arrogance ou leur préjugé.

La voix de la vérité va directement au cœur de tout le monde. Certainement, là où l'on ne croyait pas pouvoir la faire entendre, à la fin c'est la vérité qui prend le dessus, comme-ci elle arrive à transpercer les oreilles des sourds.

N. Ghoorah

वेद का अनुपम सन्देश

डॉ० माधुरी रामधारी, वरिष्ठ व्याख्याता तथा अध्यक्षा रचनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग, महात्मा गांधी संस्थान

ओ३म् । अग्न आ याहि, वीतये, गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ।।

प्रस्तुत मन्त्र में **'अग्न'** का अर्थ है 'अग्नि' के समान तेज धारण करने वाले परमात्मन्। ईश्वर ज्योतिर्मय हैं। अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले हैं। साधक ईश्वर से प्रार्थना करता है। 'अग्न' हे अग्निवस्वरूप परमात्मन्, **'आयाहि'** - आइए, मेरे हृदय में आसन ग्रहण कीजिए। **'वीतये'** - हृदय-मन्दिर में बसकर ज्ञान की ज्योति जलाइए। हृदय को प्रकाश से युक्त कर दीजिए। **'गृणानः'** - आप ही स्तुति करने योग्य है। मनुष्य आपकी ही स्तुति करता है, **'निहोता'** - आप सबकी आहुति लेते हैं और सबके दाता हैं। **'सत्सि'** - आप हमारे हृदय में विराजमान हो जाइए। **'बर्हिषि'** - आप यज्ञ में, ज्ञान-यज्ञ रूपी ध्यान में और हृदय रूपी आसन में विराजमान होइए।

मनुष्य का हृदय अन्धकार से घिरा रहता है। अज्ञानता का अन्धकार ही है, जो मनुष्य को सही और गलत की पहचान कराने नहीं देता है। अज्ञानतावश मनुष्य गलत कदम उठाता है। यहाँ तक कि शुभ कर्म भी करता है तो उसे सही ढंग से नहीं कर पाता। वह यज्ञ को भी सही विधि से सम्पन्न करने में चूक जाता है ।

एक बार स्वामी दयानन्द ने अपने एक भाषण में कहा, 'यज्ञ करने से सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।'*शेष भाग पृष्ठ २ पर*

सम्पादकीय

आज का युवा कल का नेता

युवा-युवती अपने परिवार जाति, समाज और राष्ट्र के मज़बूत स्तम्भ माने जाते हैं। युवावर्ग के बल, परिश्रम, त्याग अनुभव और दूरदर्शिता के आधार पर भविष्य निर्मित होता है। विश्व के समस्त परिवार, समाज और राष्ट्र अपने युवा-युवतियों को ज्ञानी, गुणी, मेहनती, त्यागी, परोपकारी और मानव-सेवी बनाने में प्रयत्नशील रहते हैं, ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल हो सके।

युवावर्गों के स्वास्थ्य, आचरण, कर्म, चरित्र, विद्वता तथा उनके नवीनतम आविष्कारों के बल-बूते पर ही हमारा भविष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जाता है। हमें निरन्तर अपने युवकों और युवतियों को शिक्षण व्यवस्था, चरित्रता, स्वास्थ्य-रक्षा एवं उन्नति पर पूरा ध्यान देते रहना चाहिए। साथ ही आज के वैज्ञानिक युग में विज्ञान और तकनीकी साधनों का विशेष ज्ञान प्रदान करने का अवसर देना चाहिए, ताकि वे बदलते हुए ज़माने के साथ जीवन व्यतीत करने में सफल हो सके।

भौतिक सुख भोगने के लिए तो हम अनेक प्रकार के साधन ढूँढ़ते रहते हैं और उभरते हुए बच्चों को अनेक अवसर देते रहते हैं। उनके सुख, शान्ति और आनन्द के उपाय तलाशते रहते हैं, परन्तु मानव-जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक सुख भोगने के लिए नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करके शाश्वत सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त करना है। इसीलिए हमारा परम कर्तव्य बनता है कि हम अपनी संतानों को वैदिक धर्म, संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान प्रदान करें, उन्हें आर्ष ग्रन्थों की सत्य-विद्याएँ ग्रहण करने के लिए प्रेरित करें, उन्हें मानव-मूल्य का सही पाठ पढ़ाने का प्रयत्न करें । ताकि वे धार्मिक संतान, श्रेष्ठ समाज सेवक एवं आदर्श नागरिक बनें।

यह स्वाभाविक है कि धार्मिक-शिक्षा के अभाव में हमारे शिक्षित बच्चे भी मानव-कर्त्तव्य को भली-भाँति निभा नहीं पाते हैं। वे कर्त्तव्यहीन बनकर अभ्रद व्यवहार करने लगते हैं, अपनी अशिष्टता, धूर्तता तथा मूर्खता के कारण अनेक अनुचित कर्म कर बैठते हैं, जिनसे हम अति दुखित होते हैं। शैक्षिक-क्षेत्र में तो उनके पीछे हम लाखों रुपये लगा देते हैं, परन्तु धार्मिक शिक्षा निमित्त तनिक भी ध्यान नहीं देते, यही कारण है कि हमारे नवयुवक धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में कम रुचि दिखाते हैं। ऐसी स्थिति में हमें अपने उभरते हुए बच्चों को धार्मिक शिक्षा प्रदान करना अति आवश्यक है ।

युवावस्था उपजाऊ अवस्था होती है । उसमें जैसा बीजारोपन करेंगे, वैसा ही फल प्राप्त होगा । हमारे पूर्वजों ने अपनी संतानों के जीवन में धार्मिक, सांस्कृतिक, सात्विक, नैतिक और अच्छे संस्कारों के बीज बोये थे, जिनके अच्छे फल आज हमें प्राप्त हो रहे हैं। आज हमारा भी यह कर्त्तव्य बनता है कि हम अपने जवानों को धार्मिक, सत्यवादी, संस्कारी, तपस्वी, सत्संगी और चरित्रवान बनाने का पूरा प्रयत्न करें, ताकि कल हमारी संतानें अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के श्रेष्ठ, सुयोग्य और सच्चरित्र नेता बन सके । अपने परिवार का नाम रोशन करे, अपने समाज का उद्धार करे और देश का हित करने में सफल हो ।

यह वैज्ञानिक युग है । विज्ञान के माध्यम से हमारे जीवन में अनेक प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं । जीवन व्यतीत करने के सुगम साधन प्राप्त हैं, यही कारण है कि हमारे युवा-युवतियाँ विज्ञान एवं तकनीकी साधनों का लाभ उठा रहे हैं और अपने अमूल्य धार्मिक-विद्याओं, वैदिक संस्कारों और सामाजिक सेवाकार्यों से दूर दिखाई दे रहे हैं । ऐसी गम्भीर परिस्थिति में हमें अपने भूले-भटके बच्चों को सही मार्ग दर्शन करने की आवश्यकता है ।

राष्ट्रीय आर्य युवा दिवस के उपलक्ष्य में सभी माता-पिता, समाज-अधिकारी, गुरुजनों और धर्मोपदेशकों का परम उद्देश्य है कि वे देश के प्रत्येक प्रान्त में आर्य युवकों के संघ स्थापित करें। उन संघों के माध्यम में जवानों को वैदिक धर्म, संस्कृति, तथा आर्य समाज की गतिविधियों की ओर आकृष्ट करें ताकि आज के युवा-युवती कल अपने परिवारों के सुयोग्य गृहस्वामी, श्रेष्ठ सामाजिक संस्थापक और आदर्श राजनेता बन सके। जिनके तप, त्याग, सेवाभाव, सत्यता और धार्मिक प्रवृत्ति से सभी देशवासियों का भला हो सके।

बालचन्द तानाकूर

वेद मास के परिप्रेक्ष्य में .....

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मोरिशस

हमने आर्य सभा मोरिशस की ओर से गुरु पूर्णिमा के तत्काल बाद जो सावन का मास आता है। उसे वेद मास घोषित किया है। सभी वैदिक धर्मावलम्बियों ने मान लिया और पूरे मास के दौरान वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना के आदेश स्वामी दयानन्द ने दे रखा है उसी को कार्यान्वित कर रहे हैं। महीना भर स्थानीय रेडियो द्वारा वेद सम्बन्धी कार्यक्रम चलाया जा रहे हैं।

इसी मौक़े पर आर्य सभा ने भारत से स्वामी अशुतोष को आमंत्रित किया है कि मोरिशस भर में घूम घूम कर वेदों पर प्रवचन करें और मौक़े पर यज्ञ-महायज्ञ करायें। हमें मालूम है कि देशभर में जो हमारी ओर से ४०० से कुछ ऊपर शाखा समाजें है आर्य मंदिर हैं या बहुत ऐसे परिवार हैं अपने गृह पर यज्ञ-महायज्ञ करवा रहे हैं और स्वामी जी द्वारा और विद्वानों द्वारा वेदों का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

रक्षा बन्धन भाई-बहन का पवित्र पर्व जिस रोज़ है उस रोज़ तो मोरिशस भर में पूरा नहीं होगा इस लिए पिछले कुछ वर्षों से हमने आदेश दे रखा है कि जल्दी न करें यज्ञ तो श्रेष्ठतम कर्म है ही और ऊपर से वेद की ऋचाओं का पाठ करेंगे तो फ़ायदा ही फ़ायदा होगा चाहे श्रावण का मास समाप्त हो जाए तो कोई बात नहीं आप लोग यज्ञ करते जायें।

जब त्रियोले तीन बुतिक के आर्य समाज मंदिर में स्वामी स्वर्गीय अभेदानन्द ने श्रावणी यज्ञ शुरू किया था तो नाम रख दिया था श्रावणी उपाकर्म जब कि यज्ञ प्रारम्भ करना था रक्षा बन्धन के दिन।

जब एक बार उपाकर्म कर दिया याने शुरू कर दिया तो फिर मेरे मत से उपाकर्म शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जबकि अधिक समीचीन होगा बोलना श्रावणी यज्ञ। भारत वर्ष में चार मास तक यज्ञ चलता है इसलिए चौमासा कहते हैं।

अब हमारे दूसरे भाई लोगों को भी वेद मास ही बोलना उचित होता क्योंकि वेद तो केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं हैं। वेद तो मानव के लिए ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के लिए है। पर कोई रामायण मास बोल रहा है तो कोई शिव मास बोल रहा है तो कोई शिव सप्ताह तो कोई रामायण सप्ताह।

रामायण सप्ताह से उनका मतलब तुलसी कृत रामचरित मानस से है। क्योंकि गोस्वामी तुलसीदास ने तो रामचरितमानस लिखा है। रामायण तो वाल्मीकि ऋषि ने लिखी है। ठीक है रामचन्द्र जी महाराज के ही चरित्र का विशद वर्णन है पर वह है रामचरितमानस। हिन्दी में नहीं बल्कि प्रान्तीय भाषा अवधि में है। जैसे सूरदास की भाषा ब्रज है लिपि देवनागरी है। जैसे अंग्रेज़ी या फ्रेंच भाषा होती है पर लिपि रोमन होती है।

जानकारी सही होनी चाहिए। इसी को ज्ञान कहते हैं। जहाँ संदेह हो, वहाँ ज्ञान नहीं होता है। जहाँ ज्ञान होता है वहाँ शंका नहीं होती वहाँ संदेह नहीं होता।

ACTIVITIES AT AMEKTA SAMAJ, HIGHLANDS

Mrs R. Puchooa, President A.W.W.A

Amekta Samaj is an Arya Mahila Samaj run under the leadership of Mrs Sangyouctha MOHES, daughter of late Pandit BHEEKA, former Chief Priest of Arya Sabha Mauritius. Mrs Mohes is a devout, selfless social worker who does her best to propagate Vedic Culture in her locality.

Although the Samaj has no premises of its own, Mrs Mohes organizes a monthly yajna and satsangh on the last Thursday of every month in a former Youth Club situated opposite the Highlands Sugar Factory. The Club premises is now used as a store, yet Mrs Mohes and her members celebrate all festivals there.

On Thursday 29th May 2014, the Amekta Samaj of Highlands celebrated 'Matri Divas'- Mother's Day; there were some fifty members present at that occasion. At 1.00 p.m, yajna was performed under the guidance of Pandita Nirmala Bahorun. After the yajna, Panditaji talked about three kinds of mother, namely, the biological mother, who gives birth and brings up the child, Mother Earth that nourishes us and Veda Mata that provides us with spiritual knowledge.

Then, Mrs S.Mohes, the President , elaborated on the love and care that a mother showers on her children, and sang a song dedicated to " Mothers". This was followed by a talk on the importance of a mother in one's life by Mrs Gumani, who also recited a poem on ' Mother' as well as presented another song paying homage to the mother.

Mrs R.S. Puchooa, Guest Speaker, spoke about the duties and responsibilities of a mother towards her children. A mother must inculcate values in her children, must show them the right path by herself being a role model to them (children). She must also impart the skills she has acquired to her children so as to preserve these and pass on to future generations.

In the end, there was a distribution of gifts to all the mothers present, followed by refreshments towards which all the members had contributed. Overall, this was a good programme enjoyed by all present.

At the following yajna and satsangh held on Thursday 26th June 2014, the Amekha Samaj celebrated Satyarth Prakash Diwas. After the usual yajna, Pandita N. Bahorun talked in general about the contents of Swami Dayanand's masterpiece "SATYARTH PRAKASH".

Afterwards, the Guest Speaker, Mrs R. S. Puchooa, President of Aryan Women Welfare Association, gave a summary of the first three chapters of ' Satyarth Prakash'. She mentioned that there is only one God, but He is called by many names according to His qualities, His work and His nature. She added that in Chapter Two, Swami Dayanand Saraswati ji has shown how to bring up children and in chapter Three he has discussed about the education that must be provided to children and how it is to be imparted to children.

At this Mahila Samaj of Highlands, the immense work done by Mrs S. Mohes and her members is highly laudable. They are trying their level best to educate people by spreading Vedic Culture in order to have a better society living in peace and harmony. It is our moral duty to support and congratulate this samaj.

In the context of the celebration of Purnahuti of

Shrawani Mahotsav at National Level

The President & Members of
ARYA SABHA MAURITIUS
in collaboration with
Plaine Wilhems Arya Zila Parishad
cordially invite you to attend a

Bahukundiya Yajna

Venue - Ollier Arya Samaj, QuatreBornes.
Date - Sunday 31st August 2014.
Time - 9.30 a.m. to 12.00 hrs.

***Chief Guest:* Swami Ashutosh ji Parivrajak**

Various eminent personalities will grace the function by their presence.

Programme : Yajna, Yajna-Prarthna, Pravachan, Sandesh, Bhajan-Kirtan, Vote of thanks & Shanti Path.

Your presence will be highly appreciated.

B.Tanakoor	H.Ramdhony	B.Jeewuth
R. Gowd	S. Ramdoss	D. Damree
President	*Secretary*	*Treasurer*

ओ३म् । अग्न आ याहि, वीतये, गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ।।

पृष्ठ १ का शेष भाग

स्वामी जी के इस कथन को सुनकर एक व्यक्ति प्रतिदिन अपने घर में हवन करने लगा। वह नियमित रूप से सुबह-सवेरे उठकर, स्नानादि करके हवन करता। ऐसा करते हुए तीन वर्ष बीत गए। लेकिन व्यक्ति ने देखा कई कारणों से उसके जीवन में दुख और अभाव है। वह स्वामी जी के पास शिकायत करने पहुँचा – 'स्वामी जी आपने तो कहा था कि हवन से सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। मैं तीन वर्षों से प्रतिदिन हवन कर रहा हूँ, परन्तु मुझे नहीं लगता कि मैं सुखी एवं सम्पत्तिशाली बन रहा हूँ।

स्वामी जी ने व्यक्ति से पूछा – "हवन करते समय तुम क्या अनुभव करते हो?" व्यक्ति ने उत्तर दिया । हवन करते समय तो मेरी आँखें पुस्तक में होती हैं। पुस्तक में देखकर मैं मन्त्रों का उच्चारण करता हूँ और पुस्तक में जिस प्रकार कहा गया है, उसी प्रकार मैं हवन-कुण्ड में घी, साम्रगी डालता हूँ। मेरा ध्यान तो पुस्तक, लकड़ी, घी, सामग्री में पूरा लगा रहता है। अपने भीतर मैं क्या अनुभव करता हूँ, इसपर तो मेरा ध्यान गया ही नहीं।

व्यक्ति को सुनकर स्वामी जी ने उसे एक लघु कथा सुनाते हुए कहा - 'एक माँ ने अपनी पुत्री को आदेश दिया - "बेटी, तुम बड़ी हो गयी हो अब तुम खाना बनाना आरम्भ करो।" माँ की आज्ञा का पालन करते हुए बेटी बाज़ार पहुँची और पाकशास्त्र की एक पुस्तक खरीद लायी। पुस्तक में जिस प्रकार लिखा था, उसी प्रकार उसने कढ़ाई में तेल, प्याज, सब्ज़ी, मिर्च और मसाले डाले और बार-बार चम्मच से उन्हें हिलाती रही, लेकिन खाना पका नहीं। उसी समय उसकी माँ रसोई में आयी। बेटी ने माँ के सामने अपनी समस्या रखी। माँ ने स्थिति की पूरी जाँच की। फिर बेटी से कहा – "बेटी, यह सब तो ठीक है कि पुस्तक में जिस तरह लिखा है, तूने वैसे ही किया, लेकिन आग तो तूने जलायी ही नहीं । बिना आग के खाना कैसे पकेगा ।"

इतना सुनाते हुए स्वामी जी ने अपने सामने आए व्यक्ति को समझाया – 'देखो, हवन करते समय पुस्तक में देखकर मन्त्रोच्चारण करना तथा हवन-कुण्ड में समिधा, घी और सामग्री डालना तो सही है, परन्तु अपने भीतर की अग्नि को प्रज्वलित करना उतना ही महत्वपूर्ण है। हृदय में ईश्वर विराजमान होंगे, ईश्वर की उपस्थिति की अनुभूति होगी, तभी सुख का प्रकाश होगा।'

प्रारम्भ में जिस मन्त्र का उच्चारण किया गया, उसमें साधक ईश्वर से प्रार्थना करता है - **'आयाहि'** - आइए, मेरे हृदय में आसन ग्रहण कीजिए। इसी भाव को अनेक विद्वानों ने अलग-अलग शब्दों में व्यक्त किया है। गुरुकुल कांगड़ी के एक पूर्व विद्वान्, आचार्य वागीश ने **'अग्न आयाहि'** - मन्त्र के भाव को गीत द्वारा प्रस्तुत करते हुए लिखा है –

'इस अन्धेरी कुटिया में तू अपनी ज्योति जला जा,
आ जा मेरे दिल में ज्ञान की ज्योति जला जा।'

महात्मा कबीर को भी यह भली-भाँति ज्ञात था कि जब तक ईश्वर हृदय रूपी मन्दिर में बस नहीं जाएँगे तब तक ज्ञान का प्रकाश होना असम्भव है। यही कारण है कि सन्त कबीर पलक-पांवड़े बिछाकर ईश्वर के आने की प्रतीक्षा करते हैं। इसी प्रतीक्षा में उनके मुख से भावभीने शब्द फूट पड़ते हैं –

'अंखियन में झाल्या पड़िया, पन्थ निहारी-निहारी,
जिभ्या में छाल्या पड़िया, नाम पुकारी-पुकारी।'

वेद-मन्त्र में साधक हवि लेने के लिए भी ईश्वर को बुलाते हैं – **'हव्यदातये'** - ईश्वर सबकी हवि लेते हैं। सबकी आहुति लेते हैं और अपना तेज, अपनी ज्योति, उसी को प्रदान करते हैं जो आहुति देता है। यज्ञ में आहुति न देने वाले व्यक्ति के हृदय में उस ज्योर्तिमय परमात्मा का आना असम्भव है।

एक बार एक सेठ ने लाखों रुपये खर्च करके एक मंदिर बनाया। उसने सोचा कि मन्दिर में यज्ञ-हवन होगा तो उसपर ईश्वर की कृपा अवश्य बरसेगी। मन्दिर तो बन गया, परन्तु सेठ अपने व्यापार-व्यवसाय में इतना व्यस्त रहा कि उसे मन्दिर में जाने का अवकाश न मिला।

एक दिन सेठ के घर एक आचार्य पधारे। सेठ ने आचार्य की आवभगत की और रात्रि में भोजन के पश्चात उसने आचार्य से कहा – 'आचार्य जी, मैं सोच रहा हूँ कि मन्दिर के लिए एक पण्डित को नियुक्त करूँ। मुझे तो पर्याप्त समय नहीं मिलता, लेकिन पण्डित जी मन्दिर में नियमित रूप से यज्ञ करेंगे तो हमें इसका फल अवश्य मिलेगा।'

सेठ को सुनकर आचार्य ने उत्तर दिया – 'हाँ, फल तो अवश्य मिलेगा, परन्तु आपको नहीं, अपितु उस पण्डित को, जो मन्दिर में यज्ञ करेगा।'

आचार्य के इस कथन पर सेठ ने आश्चर्य प्रकट किया – 'अरे वाह, जब मन्दिर मैं ने बनाया, हवन के लिए पण्डित को मैं नियुक्त करूँगा और उन्हें दक्षिणा भी मैं स्वयं दूँगा, तो यज्ञ का फल मुझे कैसे न मिलेगा?'

आचार्य ने बात बदलकर सेठ से पूछा – 'अच्छा यह बताइए कि आपका पुत्र कैसा है?'

सेठ ने प्रसन्न मुद्रा में उत्तर दिया – 'पुत्र तो इंग्लैण्ड में डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इस साल शिक्षा समाप्त हो जाएगी और वह घर लौट आएगा।'

इसपर आचार्य ने टिप्पणी की – 'ओ, औषधि की शिक्षा, तब तो आपको औषधियों का ज्ञान हो गया होगा?"

सेठ चकित होकर बोला – 'शिक्षा तो पुत्र प्राप्त कर रहा है। भला मुझे औषधियों का ज्ञान कैसे होगा?' आचार्य ने तुरन्त उत्तर दिया – 'क्यों नहीं होगा? जब पुत्र को इंग्लैण्ड आपने ही भेजा। उसकी पढ़ाई की व्यवस्था आपने ही की। पढ़ाई का सारा खर्च भी आपही वहन कर रहे हैं, तो आपको पुत्र की शिक्षा से ज्ञान कैसे न मिलेगा?'

सेठ समझ गया कि जिस प्रकार शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति ही ज्ञान पाता है, उसी प्रकार यज्ञ में भाग लेने वाला व्यक्ति ही, आहुति देने वाला व्यक्ति ही ईश्वर की कृपा प्राप्त करता है।

यज्ञ में बैठा साधक ही वेद मंत्र में **'हव्यदातये'** - हवि लेने के लिए **'अग्न आ याहि'** - अग्निस्वस्प, तेजस्वरूप ईश्वर से आने की प्रार्थना करता है। साधक को ज्ञात है कि ईश्वर ही **'गृणानः'** - स्तुति करने योग्य है और ईश्वर ही **'निहोता'** - यजमान की आहुति लेकर कामना पूर्ण करने वाले हैं, सबके दाता हैं। अपने हृदय में ईश्वर की उपस्थिति की कामना करते हुए साधक कहता है **'सत्सि'** - मेरे हृदय में विराजमान हो जाइए। **'बर्हिषि'** - यज्ञ में, ज्ञान यज्ञ रूपी ध्यान में तथा हृदय रूपी आसन में विराजमान हो जाइए ।

भक्त उत्तम भावना से युक्त होकर ईश्वर की उपासना करता है। मन-मन्दिर में ईश्वर को विराजमान करके यज्ञ करना ही उपासना की श्रेष्ठ विधि है। ज्ञान का प्रकाश होने पर साधक इसी श्रेष्ठ विधि को अपनाकर सुख-सम्पत्ति प्राप्त करता है; पूर्णानन्द प्राप्त करना है।

वेद

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

वेद विषय पर संसार में दो मत प्रचलित हैं। एक मत कि वेद परमात्म-प्रदत्त है और दूसरा कि वेद ऋषियों द्वारा रचित एक संकलित ग्रन्थ है ।

ऋषियों की रचना मानने वाले वेद से इतिहास निकालते हैं। उससे वैदिक सभ्यता का काल निधारित करते हैं। कुछ लोग लिखते हैं कि वेद चार पाँच हज़ार वर्ष पहले का रचा हुआ ग्रन्थ है। वे वैदिक जन को माँसाहारी भी सिद्ध करते हैं। कुछ लोग तो मोहनजोदरो और हड़प्पा की सभ्यता भी वेद में बताते हैं। इन सभ्यताओं में शिव मूर्ति आदि की प्राप्ति हैं। अतः वे वेद से मूर्ति पूजा को भी सिद्ध करते हैं।

परमात्मावाद और इतिहासवाद के अलावा आचरणवाद नाम से एक तीसरा मत भी चलता है। दत्तात्रेय में ब्रह्मा नाम के भगवान के चार मुखों से चार वेदों के प्रकट होने की बात है। इस मान्यता के आधार पर जल प्लावन, सुमेरु पर्वत, सुरासुर से समुद्र-मन्थनादि की बातें सामने आती हैं। इस वाद ने परमात्मा का अवतार दिया है।

वेद में इतिहास दर्शन करने वाले यथार्थवाद को पुष्ट करना चाहते हैं। अचराज को मानने वाले अवतारवाद के प्रचार में मस्त रहकर हिन्दू बने रहते हैं। इन वादियों ने ही माधवाचार्य, बालकरामादि वेद व्याख्याताओं को उत्पन्न किया है।

पाश्चात्य विद्वानों ने वेद को ऋषियों की रचनाओं का संकलन ग्रन्थ माना है। पाश्चात्य पद चिह्नों पर आज हज़ारों भारतीय विद्वान् भी चलने वाले मिलते हैं। हमें ऐतिहासिक, अचरजी विद्वानों के विचार, पुस्तकें और आलोचनाएँ वेद विषय पर पढ़ने को मिलते रहते हैं। कुछ लोग हमें मिथकों में वेद बताता हैं तो बहुत सारे लोग इतिहास में दर्शन कराते हैं। हम पाठक और श्रोता सुनकर स्वीकार लेते हैं । अध्यात्म ज्ञान के नाम पर हम मान जाते हैं।

अचरज और इतिहास वाद को वेद-प्रचार की आवश्यकता नहीं है। संसार आज अचरजवादी बने हैं। वेदों का अवमूल्यन हो या वेद लुप्त हो जाय, इससे उन लोगों को कोई सारोकार नहीं । संसार में वेदों के प्रचार से उन्हीं लोगों को लेना-देना रहता है, जो वेद को परमात्म प्रदत्त मानते हैं।

इस कार्य का सूत्रपात इस युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया। इतिहास और आचरणवादी स्वामी दयानन्द को पसन्द नहीं करते हैं। अचरजी व्याख्याताओं ने वेद को कर्म-काण्ड के अन्दर बैठाकर पूजापाठ में सिर्फ रटन करने का साधन बना रखा है।

आप तमिल, तेलगु, मराठी, गुजराती आदि की पूजाओं में वेद-मन्त्र सुन सकते हैं, पर सही में आज वेद के प्रचार करने वाले वही वैदिक जन हैं जो वेद को परमात्मा-प्रदत्त मानते हैं।

मनुष्य स्वतन्त्र हैं। वह सूर्य के विषय पर अपनी अपनी भावना रख सकता है, जब वह यह मानकर कि सूर्य को परमात्मा ने विश्व कल्याण के लिए बनाया है तो अधिक सही होता है; वैसे ही वेद के विषय में उसे परमात्म-प्रदत्त ज्ञान मानकर उसी के अनुसार जब जीना स्वीकारता है तब वह अपनी आत्मा से एक बड़ा बोझ उतार फेंकता है। आजकल भारतीय पृष्ठभूमि से उठे पन्थी जन अपने अपने सिद्धान्त की सिद्धि के लिए वेद की साक्षी देते रहते हैं। सभी सही हैं। उन्हें तो अपने सिद्धान्त के लिए प्रमाण चाहिए। उन्हें वेदों को बचाए रखने और वेदादेशों पर अमल करके स्वतन्त्र जीने का कोई मतलब नहीं रहता। वेद रहे या मिटे। उन लोगों के लिए चिन्ता का विषय नहीं ।

वेद को परमात्म-प्रदत्त मानने वालों की ही चिन्ता है। वे मनुष्य की उत्पत्ति के साथ साथ वेद का प्रकट होना भी स्वीकारते हैं। धरती पर पहले उत्तरे मनुष्यों के साथ वेद भी उतरा था।

देव दयानन्द ने तिब्बत से आर्यों का फैलना स्वीकारा है। तिब्बत हिमालय की तराई में है। वहीं से सूर्य-वंशी राजा इक्षवाकू आकर आर्यावर्त्त में अयोध्या को अपनी राजधानी बनकर बसे। वे अपने साथ वेद भी लेते आए थे। आर्यावर्त्त में इक्षवाकू के आने से पहले मनुष्य नाम का कोई प्राणी वास नहीं करता था। इक्ष्वाकू ने ही वहाँ आकर उस प्रदेश का आर्यावर्त्त नाम दिया था।

मानव सृष्टि के साथ वेद का भी आना होता है। एक मन्वन्तर के बीतने पर धरती जलमय हो जाती है। धरती का ऊपरि भाग जल में प्रवेश नहीं करता है। लगभग जीव बीज रूप में, जल से घीरे हुए उस जहाज रूपी ऊपरि प्रदेश में वेद-ज्ञान के साथ मनुष्य भी बच जाते हैं। धरती के सूखे भाग के ऊपर होने पर वही जहाज रूपी प्रदेश के जीव धीरे धीरे आबाद हो जाते हैं।

उसी सूखी ऊपरि भाग की उपमा कवियों ने जहाज से दी है। जयशंकर प्रसाद जी ने लिखा है – (बचा कर बीज रूप में सृष्टि झेला तब प्रलय का शीत अरुण केतन लिए निज हाथ वरुण पथ में बढ़े अभीत सुना है वह दधीची का त्याग हमारी जातीयता विकास पुरन्दर ने पवि से है लिखा अस्थि युग का मेरा इतिहास)।

हर मन्वन्तर के अन्त में दधीची रूपी त्यागी गण और इन्द्र रूपी देवता लोग मानवों की रक्षा करते हैं। वे लोग वेद-ज्ञान की भी सुरक्षा बनाए रखते हैं। तभी तो कवि लिखता है।

जगे हम लगे जगाने विस्व, तब लोक में
फैला आलोक
व्योम तम पूञ्ज हुई तब नाश, अखिल
संसृति हो उठी अशोक

इसी जल प्लावन को बाइबिल में 'नोवे' मसीहे से जहाज बनाने तथा एक तरह के जीव के जोड़ों को बचा कर रखने की कहानी चलती चली आ रही है।

देव और असुरों से समुंद्र मन्थन होना। देवताओं से पूंछ और असुरों से फन की ओर पकड़कर शेषनाग से मन्थन करना। फिर चौदह प्रकार के रत्नों का प्रकट होना। इसी जल प्लावन की बात है।

संसार में जो जीव धरती पर आए, उस जीव के वंशज अपने पहले आए जीव के बराबर ही आज तक बने हैं और जब तक रहेंगे बराबर ही रहेंगे । अतः मनुष्य भी सोचने वाला और अपनी सोच को बोलकर जीने वाला आया और जब तक रहेगा बराबर रहेगा ।

मनुष्य ने सदा से सुनकर, देखकर, सूंधकर और बोलकर जीना जाना है। वह इन्हीं से ज्ञान पाता है। एक प्रकार से ये ही उसके चार वेद हैं। इन चार अंगों के सदुपयोग सिखाने के लिए चार ऋषि आए थे। चित्रकार ने इन्हीं चारों के लिए ब्रह्मा के चार मुख बना दिए हैं। ज्ञान के लिए श्रवण करना प्रधान साधन है। इसीलिए वेद को श्रुति नाम से जाना जाता है।

क्रमशः

मानसिक एकाग्रता द्वारा सफलता

रामावध राम

एक राशि है जो आपको स्वास्थ्य, सुख, शान्ति और सफलता की ओर ले जाने वाले मार्ग को प्रकाशमान कर सकती है, यदि आप उस प्रकाश की ओर जाएँ। सफलता का सम्बन्ध मनुष्य जिस परिवेश में रहता, उस परिवेश के अनुसार मानी जाने वाली आत्मा की संतुष्टि के साथ है। यह सत्य के सिद्धांतों पर आधारित कर्मों का परिणाम है और दूसरों के सुख एवं कुशल को अपनी परिपूर्ति का एक हिस्सा मानकर अपने में शामिल कर लेती है। इस नियम को अपने भौतिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन पर लागू करेंगे तो आप सफलता की संपूर्ण, व्यापक व्याख्या पाएँगे।

जीवन में अपने अपने लक्ष्य के अनुसार लोगों की सफलता के बारे में अलग-अलग मत हैं। हमारी सफलता से औरों को दुख नहीं होना चाहिए। सफलता का एक अन्य लक्षण यह है कि इससे हम न केवल अपने लिए सुखकारक तथा लाभप्रद परिणाम प्राप्त करते हैं, बल्कि इससे दूसरों को भी सुख तथा लाभ होता हो। कल्पना कीजिए कि कोई गृहिणी दीर्घ मौन के आध्यात्मिक व्रत का अभ्यास के दौरान अपने पति तथा बच्चों से बातें नहीं करती । वह मौन रखने में सफल हो सकती है और इससे उसे व्यक्तिगत आंतरिक शान्ति भी प्राप्त हो सकती, परन्तु उसका वह आचरण स्वार्थी है और उसके परिवार के सुख के लिए बाधक है। जिनके प्रति उसका कोई कर्तव्य है उन्हें भी जब तक उसके सदाचार की उपलब्धि से लाभ न हो तब तक उसे सार्थक रूप में सफल नहीं कहा जा सकता।

महात्मा संत भी जब तक अपनी सफलता – ईश्वर-साक्षात्कार के अपने सर्वोच्च अनुभव – दूसरों को ईश्वर - साक्षात्कार करने में सहायता करने के लिए प्रदान नहीं करते तब तक वे भी पूर्ण रूप से मुक्त नहीं होते।

अतः यदि सच्ची सफलता प्राप्ति करने में आपको आनंद और सुख मिलता है जो न केवल आप स्वयं अपने सुख को बल्कि दूसरों के सुख को भी निहित कर सकते हैं।

क्यों मनुष्य रोगों से ग्रस्त हो रहे हैं ?

डॉ० विनय सितिजोरी, बी.ए.एम.एस, बी.एन.वाई.एस

वर्तमान समय में मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। वह दिन रात भाग-दौड़ करता है। इस तरह व्यस्त रहने से मानसिक तनाव आ जाता है ।

उधर वातावरण और पर्यावरण भी प्रदूषित होता जा रहा है। प्रदूषित पर्यावरण की प्रदूषित हवा को फेफड़ों में भरना पड़ता है। अशुद्ध आहार का सेवन-गलत खान-पान और अतिरिक्त समस्याओं से जीवन जीता है। बीमारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है तो इसमें आश्चर्य नहीं है। अप्राकृतिक जीवन की यह सजा स्वाभाविक है।

बीमारी को दूर करने के लिए मानव विषमय दवाओं या रसायनो को खाते-पीते रहते हैं।

मनुष्य को वस्तु स्थिति समझनी चाहिए कि प्राकृतिक आहार एवं प्राकृतिक जीवन जीने में अप्रतिम तारक शक्ति विद्यमान है।

फलों का ताज़ा रस प्राकृतिक आहार का श्रेष्ठ स्वरूप है। फल - रस प्रजीवकों, खनीज क्षारों और एँझाइमों (enzymes) का खज़ाना हैं। ये तत्व शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति में वृद्धि करते हैं। फलों का रस भूख को उत्तेजित करता है। उसको भोजन के पहले या भोजन के दो या तीन घण्टे बाद लेना चाहिए। सब्ज़ियों का रस कम से कम आधे घण्टे के बाद लेना चाहिए। उसको भोजन से पहले नहीं लेना चाहिए। नियम के विरुद्ध लिये गये रस का कभी भी असुखदायी असर पड़ सकता है। नैसर्गिक रस शरीर की संरक्षण-क्षमता बढ़ाकर स्वास्थ्य की रक्षा करता है। शरीर में अम्लीयता बढ़ने से रोग की उत्पत्ति होती है। अनुभव से सभी आहार स्टार्च (Starch) और ग्लूकोज़ (Glucose) युक्त हैं । प्रोटीन (Protein) और चरबीयुक्त आहार अम्लीय आहार हैं और उनको फल और सब्ज़ियों जैसे क्षारीय आहार के साथ संतुलित करना चाहिए । आजकल लोग ज़्यादा अम्लीय आहार लेते हैं उसकी वजह से शरीर का रासायनिक संतुलन बिगड़ता है। इसलिए ज़्यादातर लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

हम बीमार पड़ते हैं, तब शरीर के कोषों को अम्लीयता की स्थिति में से क्षारीय स्थिति में ले जाने का श्रेष्ठ साधन ताज़े फल और सब्ज़ियों का रस लेना चाहिए। फलों का रस स्वादिष्ट होता है लेकिन सब्ज़ियों का रस तीव्र रहता है इसलिए कम मात्रा में उसका उपयोग किया जाना चाहिए। बहुत से जीर्ण रोगों में जहाँ अन्य उपचार पद्धति नाकामयाब होती है, वहाँ प्राकृतिक, सात्त्विक और शरीर शुद्धिकर रसाहार चिकित्सा लेने से शरीर से विष द्रव्य बाहर निकाले जाते हैं और आश्चर्यकारक परिणाम मिलते हैं।

मन

मन को उलझाता है मानसिक ही दोष,
उजड़ जाता है उत्साह और कभी होश।

अश्व मन है अत्र-तत्र,
अस्थिर काम है असुरी मित्र ।
विचलित क्रोध है विवेक विनाशक,
निर्लज्ज लोभ है निर्बुद्धि ग्राहक
मायावी मोह है मानव तुम्हारा अज्ञान,
अशिष्ट अहंकार है अज्ञानी तुम्हारी शान।

हे मानव !
अब लगा दो अंधे मन पर लगाम,
सदा करते रहो सत् कर्म तुम निष्काम।

प्राणायाम से हो प्रतिदिन मन की शुद्धि,
पंच दोष न कर सकें पुनः तुम्हें विवश कभी।

ब्रह्मयज्ञ करके ब्रह्म के निकट रहे
तुम्हारा मन,
अंतर्मुख होकर असीमता में लीन रहे
तुम्हारा मन,
वैदिक धर्म को समझकर विकार रहित
रहे तुम्हारा मन ।

हे मानव !
स्थिर मन से बन जाए सर्वश्रेष्ठ तुम्हारा आचरण
और सदा सुखी रहे हर पल तुम्हारा जीवन ।

वत्सला राधाकिसुन

SHRĀVANI : an opportunity for spiritual growth

Shrāvani is being celebrated at both the family unit level as well as social groups. This festival provides ample opportunity for spiritual growth. Given the individual is the smallest unit of the family and society efforts should be at the individual level. Such initiatives would generate multiplier effects at the level of family units and higher yields at the social level of the society.

The current tradition encompasses yajnas and discourses on the knowledge ingrained in the Vedic hymns. With due respects to the traditions perpetuated over decades, it would be wise to consider innovations: those who are now fairly conversant with the Vedic knowledge may move one step ahead, i.e. start the practice of Ashtanga Yog *(yama-niyama-āsana-prānāyāma-pratyāhāra-dhārnā-dhyāna-samādhi)* thereafter play the role of trainers of the new generation as well as be role models who demonstrate perfect harmony between thoughts, speech and deeds.

MANURBHAVA : the unequivocal message of the Veda

What is the intent of such a message in the scriptures? Man does not become a human being by just being born in the specie. He needs to acquire a lot of knowledge to be able to lead an independent life as compared to other species. Other forms of life from the unicellular organisms (amoeba and protozoa) to complex ones such as plants and animals are born with a lot of innate knowledge or *"swabhavik jnāna"* such as food manufacturing or food intake, resisting adverse conditions, etc. On the other hand man has to learn the basics which the lower species already know e.g. to walk, clean himself, eat, drink, and a lot more of complex activities such as dressing, reading, writing, living as a member of a family and society. Such acquired knowledge is called *"neimittik jnāna"*.

Man is called a social animal. In fact he has a lot to learn to live as such. Vedic philosophers have rightly drawn attention in the following *shloka*:

Āhār nidrā bhaya maithunam cha,
sāmānyametat pashubhirnarānām
Dharmo hi teshāmadhiko vishesho, dharmenahinah pashubhih samānah

Food, sleep, fear, begetting children is common to men and animals. *Dharmācharan*, i.e. righteous living distinguishes us from animals. He who is alive and kicking only for food, sleep, begetting children will have to drop the "social" and be content with the "animal" part of this modern definition. One, who resorts to *adharmācharan* (a despicable / unprincipled / immoral life style) lives to only satiate basic cravings of the animal kingdom.

Another shloka reads as follows:

Yeshā na vidyā na tapo na dānam,
jnānam na shilam na guno na dharma
Tey martya loke bhuvi bhārabhutā,
manushya rupena mrigāsha charanti

He who has neither acquired nor put up any effort, nor nurtured the least desire to acquire true knowledge; who has no penchant to contribute to the physical, moral and spiritual advancement of his brethrens; who finds it difficult to be simple and simple to be difficult; who finds no purpose to be virtuous in life, is only a heavy weight in this world, and can be rightly compared to animals who live only for the sake of keeping alive.

The human life is wasted when one lives in utter ignorance that the human specie is the only form of life which is empowered to attain the highest goal – moksha (salvation or liberation from the cycle of birth and death.)

Shrāvani is a real opportunity for spiritual growth. The personality of somebody empowered with an upstanding moral conduct radiates across his family, his neighbourhood, his village / town, his country and the world at large. He becomes a 'mascot' or role model to others.

Glorification, prayers and being in communion with the Almighty *(Ishwara Stuti Prārthanā Upāsnā)* renders a person humble vis-a-vis himself, his fellow brethrens, other living organisms and God. He relates to other living / sentient beings as souls not merely physical bodies *(ātmavat vyavahār)*. He effectively subdues the adverse effects of the imprints *(mana ke andar ke kleshon ko dur karke)*, fortifies his level of self-confidence as well as multiplies his efforts to be human.

Those efforts yield irreversible and unadulterated happiness. Success in the field of spiritual growth depends solely on the acquisition of *'satya vidyā'* and *'purushārtha'*, i.e. the efforts put in at the level of the mind, speech and deeds to live up to the ideals of that true knowledge . Each initiative should be goal-oriented, namely - to progress unto *moksha* (be liberated from the cycle of birth and death). That is achievable by not being born again. He who is born is bound to die and he who attains *moksha* is not born again, thus will not die. And that lasts for 311,040,000,000 years on the man time scale.

Every race starts with a first step.

The first step in the race towards spiritual growth is the comprehensive and practical application of the first two concepts of *Ashtānga* Yog (eight-fold process of Yog), i.e. *Yama-Niyama* (social & self discipline). That pristine Vedic knowledge for self and God realisation was encoded by Maharishi Patanjali's as *sutras* (aphorisms) of the Yog Darshan.

The key for a good drive on the road leading to spiritual growth is a thorough study of the RigVedadi Bhashya Bhumika of Maharishi Dayanand Saraswatee. Only then we shall understand that Shrāvani is the opportunity to deepen our knowledge on spiritual matters, redesign our life style and remain on the Vedic tracks of life... and... Opportunity rarely knocks at the door!

BramhaDeva Mukundlall
Darshan Yog MahāVidyālaya, Gujarat, India
Rojad, Gujarat, India

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Vedas and the importance of Forests and Trees

The Vedas, comprising the Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and the Atharva Ved, are of Divine origin revealed to Rishis Agni, Vayu, Aditya and Angira respectively at the beginning of creation of man for the moral, spiritual, and physical guidance and uplift of humanity. They are the reservoirs of all wisdom necessary to sustain the whole universe. Unfortunately Man has changed his code of conduct and has interfered with nature for his immediate needs to such an extent that we are now facing the dreadful reactions of climate change, pollution, rise in atmospheric temperature with high concentration of green house gases causing a negative impact in our eco-system.

Forests play a major role in maintaining the equilibrium in our eco-system. The Vedas have stressed on the need for the protection and development of forests and urge human beings to protect, preserve, nurture and nourish environment and the natural habitation in its pristine glorious form.

The United Nations General Assembly proclaimed the year 2011 as the International Year of Forests (Forests 2011) with the main theme 'Forests for People'. This theme highlighted the relationships between forests and the people who depend on them. The United Nation General Assembly has also declared the 21th March as the International Day of Forests and Trees to raise awareness of the importance of all types of forests and preservation of tress, and the Global celebration of Forests. The Vedas have addressed Man to safeguard the trees as they are verily the treasures for generations.

The very first mantra of Yajur Ved says ***"Ishe twordie toi vayava stha devovaha savita....."***

Oh Lord, we resort to thee for the supply of foodstuffs and vigour (energy)....."

Forests are home to multitude of fauna and flora many of which are enormously beneficial to us. Since the dawn of civilization, man has been interfering with nature for his survival and today due to our unsustainable management practices and over exploitation of forests resources, many areas of the world are being severely affected.

Forests provide shelter to people and enhance biodiversity benefits, are sources of food, medicines, clean water, wood, and biodiesel for clean energy and also play a vital role in maintaining a stable global climate for a healthy environment through absorption of the greenhouse gas carbon dioxide and release of oxygen to the atmosphere.

TAM IT SAMANAM VANINAS CA VIRUDHO
ANTARVATIS CA SUVATE CA VISVAHA

The plants and herbes emit the vital air called samana (oxygen) regularly.

Sam Veda 1824

Forests cover 31% of total global land area and store more than one trillion tons of carbon. Over 1.6 billion people's livelihood depend on forest and trade in forestry was estimated to $ 327 billion in 2004 and forests are home to 300 million people around the world. In Mauritius , forests provide direct and indirect employment to some 5000 people in various forestry sectors.

VIRUDO HO VAISVADEVIR
UGRAH PURUSAJIVANIH

Plants possess qualities of all deities. They are saviours of humanity

Atharva Veda 8.7.4

OSADHIR ITI MATARAS
TAD VO DEVIR UPA BRUVE

Plants nourishes and protect the world, hence they are called mothers

Rig Veda 10.97.4

Forests sustain a variety of ecosystems essential for maintenance of life on earth. However , deforestation is moving at an alarming rate with 13 million hectares of trees felled down each year for conversion to agricultural purposes and human settlement. According to the Millennium Ecosystem Assessment about 54 countries have lost around 90% of their forests cover. Deforestation accounts for 12 to 20 percent of global greenhouse gas emissions that contribute to global warming. During the last three centuries of colonization of Mauritius by the Portuguese, French and British, there has been indiscriminate deforestation for agriculture, timber exploitation, sugarcane plantation, human settlements and other infrastructure. The original native forests have almost completely disappeared leaving less than 0.12% of forests and between 1990 and 2010, Mauritius lost an average of 200 ha or 0.15% of forest cover per year.

The latest report from Wikepedia on 6th November 2011 pointed out that the Indian Ocean Islands(Madagascar, Mauritius, Reunion, Seychelles, Comoro) are among the ten most endangered forest of 2011. Thus a reduction in the catchment area could be a cause of the change in the precipitation pattern recorded in the region of Mare aux Vacoas Reservoir resulting in the acute drought being felt for the past few years.

MA KAKAMBIRAM UD URHO VANASPATIM
ASASTIR VI HI NINASAH

Rig Veda 6.48.17

Don't cut trees, because they remove pollution

Thus, at the United Nation Conference on Environment and Development (UNCED) or Earth Summit held at Rio de Janeiro in 1992 the necessity for a concrete action for conservation and sustainable management of forests took shape. Forests 2011 is a unique opportunity to highlight the key role of forests in our lives. It is therefore high time that we become conscious of the harm caused by deforestation resulting in loss of biodiversity, soil erosion, elimination of catchment areas, global warming and destruction of habitats. Some 14,000 to 40,000 species are being lost every year from the tropical forests through the intervention of man. Habitats loss is the key reasons for extinctions of species and decline in our ecosystem. Biodiversity is scientifically important for human survival. It plays a significant role in the purification of water and air, pollination, capture of carbon dioxide by trees and other plants, renew oxygen supply, natural pest control. The knowledge of plants serving as purifiers of air was known to our Vedic Seers from time immemorial and perhaps that was the reasons certain plants have been regarded as sacred and a means to save the invaluable plants from destruction. Some of the plants are peepal (Ficus religiosa), pakur (Ficus infectoria), bel (Aegl marmelos),bargad(Ficus benghalensis), neem (Azadirachta indica), tulsi (Ocimum sanctum), Ipomea carnea .

UGRA YA VISA DUSANIH OSADHIH

The plants and herbs destroy poisonous effect of the atmosphere

Atharva Veda 8.7.10

VANASPATIH SAMITA

The plants removed ill-effects

Yajur Veda 29.35

Scientists are exploring various avenues to limit the carbon dioxide emission through carbon capture and storage techniques called carbon sequestration. Carbon sequestration is the process by which atmospheric carbon dioxide is taken up by trees, grass and other plants through photosynthesis and stored as biomass(trunks, branches, foliage and roots) and soils. This helps to offset the concentration level of carbon dioxide in the atmosphere. Hence sustainable forestry practices can increase the ability to sequester atmospheric carbon dioxide while enhances other ecosystem services.

The Plaines Wilhems Arya Zila Parishad, in a symbolic gesture, initiated a campaign of tree planting in all the courtyards of the Arya Samaj Branches, educational institutions and Ashrams (Homes) run by Arya Sabha where enough place is available. The kick-off of the project was done at the Ollier Arya Samaj followed by Stanley Arya Samaj, Charles Renauds Arya Samaj, Benares, DAV College Morcellement, Phoolbasseea Ashram, Chemin Grenier. More than 700 plants including medicinal plant species were distributed to participants since the World Environment Day of 2012 till the celebration of World Environment Day 2014 organised by the Planes Wilhems Arya Zila Parishad under the aegis of Arya Sabha Mauritius and in collaboration of the Ministry of Environment and Sustainable Development and the Municipal Council of Vacoas Phoenix.

Our planet is in peril. Therefore, let us all join hands together and take corrective measures to restore our forests otherwise human race will be at gateway of extinction. Prof Bruce Nelson of University of Southern California rightly said " *People who will not sustain trees will soon live in a world that will not sustain people".*

The ill effects of global warming is at our doorstep. Should we keep on plundering the Earth for our own material benefits or make sure to protect it for our future generations?

Joseph Joubert said " We have received the world as an inheritance, no one has the right to destroy it but everyone has the duty to leave in and improved condition"

Atharva Ved *:" O Mother Earth! Enrich me wisdom so that I should not damage or* degrade you. Whatever I dig out , should quickly be covered with greenery".

So brothers and sisters it is high time that we make our contribution to save our planet Earth by planting as many trees as possible and let us think GREEN.

Ravindrasingh Gowd